ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-10* January-2022
Anthology : The Research

रामकिंकर बैज के शिल्प में मानवीय संवेदनाः एक अध्ययन

Human Sensation in the Crafts of Ramkinkar Baij: A Study

Paper id: 15672 Submission: 11/01/2022, Date of Acceptance: 21/01/2022, Date of Publication: 23/01/2022

सारिका शर्मा
शोधार्थी,
चित्रकला विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, भारत

रीतिका गर्ग
असिस्टेंट प्रोफेसर,
चित्रकला विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, भारत

सारांश

संवेदना शब्द की उत्पत्ति संस्कृत शब्द संवेद से हुई है, जिसका अर्थ है-सुखदुःख का अनुभव, ज्ञान बोध की प्रतीति होना। संवेदन के मूल में वेद शब्द है, जिससें वेदन व संवेदन शब्द बनते है। संवेदन शब्द पुल्लिंग शब्द है, इसमें आ प्रत्यय के योग से संवेदना शब्द स्त्रीलिंग बनता हैं।

अंग्रेजी के सेंसिबिलिटी (Sensibility), सैंसेशन (Sensation), सिम्पेथी (Sympathy), फीलिंग (feeling), जैसे शब्द संवेदना शब्द के समानार्थी है।[1] वृहद् हिंदी कांश में संवेदना, का अर्थ है- ज्ञान, अनुभूति जताना, सूचित करना, प्रकट करना इत्यादि।[2]

संवेदना/वेदना का अर्थ ज्ञानेन्द्रियों के अनुभव से हैं। आँख,नाक, कान, जिव्हा तथा त्वचा प्रमुख ज्ञानेन्द्रियाँ है। ये ज्ञानेन्द्रियाँ हमारे भावजगत को प्रभावित करती हैं। इनमें वातावरण के परिवर्तनों को ग्रहण करनें की क्षमता होती है। तथा इन संवेदो से हमें अपने आस-पास के वातावरण का बोध होता है। सामान्यतः संवेदना को सहानुभूति के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता हैं, तथा मनोविज्ञान में इसका अर्थ ज्ञान और ज्ञानेन्द्रियों के अनुभव से हैं। संवेदनशील व्यक्ति दूसरों के दुःख दर्द को अच्छे से समझ लेता है, जब हम किसी अन्य का अपनी आत्मा पर लाते है, तब कहीं संवेदना का जन्म होता है।

संवेदना का संबध मानव के मन से हैं। किसी वस्तु को देखकर मानव के मन तरह-तरह के भाव उत्पन्न होते हैं, यही संवेदना है। भारतीय काव्यशास्त्र में इसे रस सिद्धान्त के नाम से जाना जाता है, इस सिद्धान्त को भाव, विभाव, अनुभाव व संचारी भाव आदि सूक्ष्मभावों में विभाजित किया गया हैं। रति, हास्य, शोक, क्रोध आदि स्थायी भावों से रस की उत्पत्ति होती है। मानव हृदय में भावनाओं का प्रस्फुटन किसी बाह्य वस्तु, दृश्य या किसी परिस्थिति विशेष की कल्पना द्वारा होता है।[3]

किसी वस्तु या व्यक्ति को देखकर मन में जो भावना उत्पन्न होती हैं, वह भावना किसी को दुःखी देखकर भी हो सकती है और सुखी देखकर भी।क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी हैं, और भावों की अनुभूति मानव को मानव से जोडने का कार्य करती हैं। संवेदना के संबध में आनंद प्रकाश दीक्षित लिखते है कि "कलाकार अपने परिवेश के संपर्क में आता हैं, परिवेश की कोई वस्तु, किसी प्रकार की संवेदना कलाकार में निर्माण करती है, इस संवेदना की प्रतिक्रिया के लिए या प्रत्युद्गार की अधीरता, यह आकुलता उसे प्रकाशन पर, अभिव्यंजना पर, अभिव्यक्ति पर विवश करती है। इस विवशता का परिणाम कलाकृति के रूप में प्राप्त होता है। संवेदना का आलंबन संसार की कोई वस्तु या घटना या प्रक्रिया होती है।"[4] अर्थात भावों को उत्पन्न करने में परिस्थितियों की अनुकूलता अपेक्षित है।

The word 'sensation' is derived from the Sanskrit word 'samveda', which means the experience of pleasure and pain, the realization of knowledge. At the root of sensing is the word Veda, from which the words Vedana and Sensing are formed. The word sensing is a masculine word, In this, the word sensation is formed by the addition of the suffix aa. of english

Words like sensibility, sensation, sympathy, feeling, are synonymous with the word senses. [2]

Sensation/pain refers to the experience of the senses. Eyes, nose, ears, tongue and skin are the main sense organs. These sense organs affect our senses. They have the ability to absorb changes in the environment. And through these senses, we get a sense of the environment around us. Sensation is commonly used in the sense of empathy, and in psychology it refers to knowledge and experience of the senses. Sensitive person understands the pain of others very well, when we bring someone else's sorrow on our soul, then somewhere sensation is born. Sensation is related to the human mind. Seeing an object, different types of feelings arise in the human mind, this is the sensation. In Indian poetry, it is known as Rasa Siddhanta, this principle is divided into subtle expressions like Bhava, Vibhava, Anubhav and Sanchar Bhava etc.Rasa is generated by permanent expressions like anger, humour, grief, anger etc.

Emotions erupt in the human heart by imagining an external object, scene or a particular situation.3
Seeing any object or person, the feeling that arises in the mind, that feeling can also be on seeing someone sad and seeing happy. Because human beings are social animals, and the feeling of feelings works to connect human to human. Regarding sensation, Anand Prakash Dixit writes that "The artist comes in contact with his surroundings, any object in the environment, some kind of sensation creates in the artist."
The impatience of the response to this sensation, or the impatience of the response, compels it to manifest itself, to expression, to expression. The result of this compulsion is obtained in the form of artwork. The support of sensation is some object or event or process in the world.

मुख्य शब्द / Keywords ज्ञानेन्द्रियां, अभिव्यजंना, रससिद्वान्त, प्रतिक्रिया, आलम्बन।
sense organs, the expression, the taste, the reaction, the support.

प्रस्तावना

रामकिंकर बैंज के अनुसार "एक शिल्पकार बनने के लिए जब तक स्वयं मिट्टी तैयार न करों, स्वयं बनाओं, बिगाड़ो, संतुष्ट न होने तक साँचे में ढालो, पत्थर तराशों, लकड़ी कांटो, लोहे के तारों से संघर्ष करो, जब तक ये काम स्वयं नहीं करते, तब तक इस विद्या में पारगंत होना कठिन है।

26 मई, 1906 ई. में पश्चिम बंगाल के बांकुरा शहर के पास जुग्गीपाड़ा गाँव में रामकिंकर बैज का जन्म हुआ। इनके परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नही थी जिसके कारण इन्हें बचपन से ही संघर्षो का सामना करना पड़ा। सन् 1925 में रामानंद चटर्जी ने बैज की कला को पहचाना तथा आगे की शिक्षा के लिए शान्ति निकेतन भेज दिया। वहाँ कलागुरू नंदलाल बोस के सान्निध्य में रहकर बैज ने कला की शिक्षा प्राप्त की। शान्ति निकेतन के शांत, उल्लासपूर्ण वातावरण ने बैज को प्रभावित किया। कविता, संगीत, नाटक, प्राकृतिक सौन्दर्य बैज की कला के प्रेरणास्त्रोत बने। चित्रकला में निष्णात होने के बाद बैज ने मूर्तिकला में नवीन प्रयोग किए तथा सीमेंन्ट व कंकरीट माध्यम से मूर्तिशिल्पों की रचना करने वाले देश के प्रथम मूर्तिकार बने। स्क्रीन प्रिंटिग, रंग सज्जा जैसी विभिन्न विधाओं में कार्य किया।

प्रयोगधर्मी स्वभाव के धनी बैज ने हर तरह के माध्यम का प्रयोग किया, चाहे वह धातु हो, टेराकोटा हो, प्लास्टर हो या लकड़ी![6] बैज की कला ने देश में एक नयी शक्ति संचारित की। यह कहने मे अतिश्योक्ति नही होगी कि बैज के शिल्पों में भारतीय माटी की महक है। भारतीय परम्परा का नया कीर्तिमान स्थापित करने मे बैज का महत्वपूर्ण योगदान रहा। शान्ति निकेतन मे रहते हुए बैज ने रवीन्द्रनाथ टैगोर के इस दृष्टिकोण को अपनाया कि परम्परा को, जो बेशक बहुत महत्वपूर्ण है, कलाकार व उसके विकास के बीच अड़चन नहीं बनने देना चाहिए।[7]

दैनिक जीवन के विषयों को बैज ने अपनी कला के माध्यम से जीवन्त किया। उन्होनें अपने आस-पास जो घटित घटनाएं देखी उनसे बैज बहुत प्रभावित हुए। जिस प्रकार एक व्यक्ति जिस समाज मे रहता है, समाज के साथ उसका जुड़ाव होना स्वाभाविक हैं, क्योंकि समाज के बिना व्यक्ति और व्यक्ति के बिना समाज की परिकल्पना नही की जा सकती। समाज में घटित घटनाओं का असर उस पर पड़ता है और वह शोकग्रस्त हो जाता है। यद्यपि एक कलाकार अपनी इस अनुभूति को कलाकृतियों के माध्यम से समाज के समक्ष प्रकट करता हैं। रामकिंकर बैज ने अपनी अनुभूतियों को, संवेदनाओं को कलाकृतियों के माध्यम से प्रकट किया। बैज का झुकाव मुख्यतः सामान्यजन की ओर रहा जिनमें संधर्षशील प्राणी, महिला, निम्न मध्यम वर्ग के लोग शामिल थे। सामान्यतः बैज साधारण जीवन जीना पसन्द करते थे, इस कारण उनका अधिकाशं समय इन्ही लोगों के साथ गुजरता था। दुनिया की चकाचौंध में रहना बैज के स्वभाव के विपरीत था। परिश्रमी लोग बैज को बहुत अधिक प्रिय थे, जिस कारण वे स्वतः बैज की रचनाओं में उभर जाते थें। यथार्थवादी शैली में बैज ने निम्न वर्ग के लोगों के दुःख-दर्द को कलाकृतियों के माध्यम से दर्शाया और अपने हृदय का उद्गार प्रकट किया। सीमेंट, प्लास्टर, कंक्रीट-पत्थर से उन्होनें असंख्य मूर्तिया बनाई। रवीन्द्रनाथ टैगोर से लेकर सामान्य परिवार के व्यक्तियों का बैज ने चित्रण किया, इसके अलावा उन्होने राष्ट्रीय नेताओं के भी चित्र बनाए। बैज पर गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गांधी जैसे महान विभूतियों का गहरा प्रभाव पड़ा। गांधी जी के समाज सुधारक आंदोलन से वे बहुत प्रभावित थे। गाँधीजी की दृष्टि से कोई भी कार्य छोटा या तुच्छ नहीं होता। वह सफाई करने, पाखाना साफ करने या मैला उठाने मे कोई बुराई नहीं देखते थे। वर्धा व सेवाग्राम मे रहते हुए स्वयं इन कार्यो को किया और लोगों के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत किया। निर्धन लोगों, बीमार व्यक्तियों, मेहनतकश मजदूरों के प्रति वे सहानुभूति रखते थे कभी कभी स्वंय रोगी की सेवा भी करते थे। सेवाभाव मे रहते हुए गांधीजी के चारों ओर ग्रामीण परिवेश विद्यमान था तथा जीव-जन्तुओं के प्रति दया, भाव, व करूणा उनके व्यक्तिव में झलकती थी। उनके प्रभाव से देश में सामाजिक प्रगति आयी। गांधीजी के अहिंसावादी सिद्धान्त का देश पर व्यापक प्रभाव पड़ा। स्वंय बैज गांधीजी से बहुत अधिक प्रभावित हुये उन्होंने संघर्षशील व्यक्ति, महिला, निम्न मध्यम

वर्ग के लोगों की वेदना को कलाकृतियों के माध्यम से समाज के समक्ष एक नयी सोच, विचार के साथ दर्शाया उससे सामान्यत वर्ग के लोगों का नजरिया बदल सकें। बैज की बनाई हुई कृतियां ऊर्जा उल्लास से ओतप्रोत मानव जीवन की यथार्थ अभिव्यक्ति है।

विनोदिनी, कुत्ते के साथ महिला, गोल्डन क्रॉप, ए स्टेण्डिंग वुमेन, पिकनिक, थ्रेसिंग, मदर एण्ड चाइल्ड, समरनून आदि बैज के प्रमुख चित्र है, जो तैलीय पद्धति से बने हैं इसके अलावा उन्होनें अनेक मूर्तिशिल्प बनाये। मिलकॉल, संथाल परिवार, मिथुन, रवीन्द्र नाथ टैगोर, दांडीमार्च, गांधी, यक्ष-यक्षिणी, हार्वेस्टर और लैम्प स्टैण्ड बैज के प्रमुख मूर्तिशिल्प है। एक ही विषय पर बैज ने विभिन्न माध्यमों से कलाकृतियों का निर्माण किया। संथाल जनजाति ने बैज को विशेषतः प्रभावित किया सामान्यतया संथाल जनजाति जंगलों में रहती है और अपनी आजीविका के निर्वहन के लिये मछली पकडने, शिकार करने तथा खेती जैसे कार्यो में संलग्न रहती है। बैज ने संथाल फैमिली पहले मृणमयी माध्यम में बनाई बाद में सन् 1938 में पुनः सीमेंट व कंकरीट माध्यम से बडा मूर्तिशिल्प बनाया। 427 से.मी. ऊँचा यह मूर्तिशिल्प वर्तमान में कला भवन शान्ति निकेतन के प्रांगण की शोभा बढ़ा रहा है। इस शिल्प में बैज ने संथाल परिवार को दर्शाया है। परिवार मे पति-पत्नि व दो बालक है। संथाल पुरूष के बांये कंधे पर कावड़ है, जिसमें आगे की टोकरी में एक बालक को बैठे हुये दिखाया है, तथा कावड़ का भार संतुलित रखने के लिये पीछे की टोकरी में घरेलू सामान रखा हुआ है। संथाल महिला ने अपने बांये हाथ से शिशु को गोद में ले रखा है उनके साथ एक कुत्ता भी दर्शाया है, जो पशुओं के प्रति मानवीयता का भाव प्रदर्शित करता है। इन सभी को देख कर लगता है कि संथाल परिवार आजीविका की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर पलायन कर रहा हो। इस शिल्प में की शारीरिक मुद्रा गतिमान अवस्था में है। ऊर्जा उल्लास की शक्ति से ओतप्रोत यह मूर्तिशिल्प समाज के लोगो को परिवार के साथ-साथ पशु-पक्षियों के प्रति प्यार प्रेम की भावना विकसित करता नजर आता है।

मानव आकृतियों की रचना में बैज ने गति पर अधिक ध्यान दिया। प्रयोगों व खोजो के परिमाणस्वरूप कलाकृतियों के माध्यम से मानवीय संवेदनाओं को प्रकट किया। इसके अलावा बैज ने रवीन्द्र नाथ टैगोर का व्यक्ति चित्र बनाया इसे देखकर टैगोर ने बैज से कहा था "रामकिंकर अब पीछे पलटकर मत देखो आगे बढते जाओ"।[8] इसके बाद बैज ने कभी पीछे पलटकर नहीं देखा और आगें बढते गये। यक्ष-यक्षिणी की प्रतिमा बनाने से पहले बैज ने अनेक संग्रहालयो में स्थापित यक्ष-यक्षिणियों की मूर्तियों का गहराई से अध्ययन किया। 14 फीट ऊँची यक्ष-यक्षिणी की प्रतिमा कुषाणकाल से प्रभावित मानी जाती है। इस प्रतिमा को तैयार करने में दस वर्ष का समय लगा। बैज के द्वारा बनायी गई यक्ष-यक्षिणी की प्रतिमा सजीव प्रतीत होती है, इसमे एक असीम ऊर्जा का आभास होता है। इसे सन् 1970 में रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया, नई दिल्ली की इमारत के बाहर लगाया। इनके अधिकतर मूर्तिशिल्पों में टैक्सचर खुरदरापन लिये हुए है। इसके अलावा कच व देवयानी मूर्तिशिल्प में ताजगी व कोमल भावनाओं की अभिव्यक्ति है।[9] मदर एंड चाइल्ड प्रसिद्ध श्रृंखला में बैज ने अनेक मूर्तियाँ बनाई। सन् 1934 मे बिहार में भूकम्प आया, गांधीजी ने भूकम्प प्रभावित क्षेत्रों मे पीडितों की मदद की। बैज ने इस घटना को कलाकृतियों के माध्यम से जीवन्त किया। अकाल शीर्षक से बने हुए उनके शिल्प गत्यात्मक है। रामकिंकर बैज के व्यक्तित्व व कृतित्व से साहित्यकार व फिल्मकार भी बहुत प्रभावित हुए। बांग्ला के प्रसिद्ध उपन्यासकार "समरेश बसु"ने रामकिंकर बैज के जीवन पर आधारित अपने उपन्यास का नाम दिया "देखी नाइ फिरे" (नेवरलुक्ड बैक)[10]

दांडी मार्च नामक मूर्तिशिल्प मे बैज ने गांधी को धोती पहने हुए तथा हाथ मे लकड़ी को पकड़े हुए दृढ़ निश्चय के साथ खड़े हुए दिखाया गया है। घटना के अनुसार अंग्रेजों के द्वारा नमक पर कर लगाया गया तथा भारतीयों को नमक बनाने से रोका जाने लगा। इससे भारतीय जनता बहुत परेशान व हताश हो गई। 12 मार्च 1930 को गांधीजी ने अपने अनुयायियों के साथ मिलकर पैदल यात्रा की, 24 दिनों की यात्रा के बाद दांड़ी पहुँचकर नमक कानून तोड़ने का संकेत दिया, जब यह प्रक्रिया पूरे देश मे दोहराई गई तब प्रशासन को समझ मे आया कि यह घटना भारत मे ब्रिटिश शासन के अस्तित्व पर गंभीर संकट पैदा करती है। इस घटना को बैज ने अपनी कला के माध्यम से जीवन्त किया।

मिलकॉल नामक मूर्तिशिल्प में बैज ने चावल की मील में काम करने वाली दो स्त्रियों के साथ एक बालक को जाते हुए गतियुक्त मुद्रा में दर्शाया है। भागती-दौड़ती जिंदगी मे अपने स्वप्नों को पंख देती ये महिलाएँ अपनी आजीविका का भली-भॉति निर्वहन कर रही हैं। अपने स्वाभिमान के साथ वे परिस्थितियों का डटकर सामना करती है। इस मूर्तिशिल्प के माध्यम से बैज ने जीवन की संघर्षपूर्ण स्थिति को दर्शाया है। नारी के जीवन को अभिव्यक्त करता हुआ यह मूर्तिशिल्प वर्तमान में शान्ति निकेतन (प.बंगाल) मे स्थापित है।

इसके अलावा अमूर्त शैली में भी बैज ने अनेकों मूर्तिशिल्प बनाए। लेम्पस्टैंड बैज का पहला अमूर्त मूर्तिशिल्प है, त्रिआयामी रूप में प्रस्तुत यह शिल्प लम्बा व पेचीदा है। बैज ने समाज मे व्याप्त समस्याओं का गहनता से अध्ययन किया तथा प्रयोगों व खोजों के परिणामस्वरूप अपनी कला के माध्यम से मानवीय संवेदनाओं को प्रकट किया। कला के क्षेत्र मे अपूर्व योगदान के कारण उन्हें भारत

सरकार द्वारा सन् 1970 मे पद्मभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 2मई, 1980 को कला की इस महान विभूति का निधन हुआ।

संथाल फैमिली

मिलकॉल

सुजाता **दांडीमार्च**

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध का मुख्य उद्देश्य मानवीय भावो व उसके कारणो को गहराई से समझना है। तथा कला की उपयोगिता को सुनिश्चित करना है ।

निष्कर्ष

इनकी बनायी हुई कलाकृतियों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि रामकिंकर बैज ने अपने मूर्तिशिल्प के माध्यम से समाज के संवेदनशील पक्ष को उजागर करने की चेष्ठा की है, इनकें बनाए हुए शिल्पों के माध्यम से हमें श्रमिकों, दीन-दुःखियों कि परिस्थितियों का ज्ञान होता है, कि ये लोग जीवन निर्वाह के लिए किस तरह संघर्ष करते है। भावों व चिन्तन के जिन प्रक्रमों से बैज की कला गुजरती है, उसमें भारतीय संस्कृति व मानवीयता का भाव परिलक्षित होता हैं तथा संयोजन में

सादगी व सरलता के दर्शन होते है। वर्तमान मे बैज के मूर्तिशिल्प दिल्ली, कोलकाता (शान्ति निकेतन),,,,,,,,,,,आदि सार्वजनिक स्थानों पर लगे हुए हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *तिवारी, भोलानाथ तथा चतुर्वेदी, महेन्द्र, व्यावहारिक हिन्दी अंग्रेजी शब्द कोश, नेशनल पेपरबेक्स, 2019,पृष्ठ सं.646*
2. *सहाय, कालिका प्रसाद एवं अन्य, वृहद हिन्दी कोश, ज्ञान मण्डल लिमिटेड़, वाराणसी, 2016, पृष्ठ सं.1409*
3. *गुप्त,गणपतिचन्द्र, भारतीय एंव पाश्चात्य काव्य सिद्धान्त, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2009, पृष्ठ सं. 70*
4. *दीक्षित, आनन्दप्रकाश, आलोचना प्रक्रिया और स्वरूप,नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1976, पृष्ठ सं.43*
5. *चतुर्वेदी, ममता, समकालीन भारतीय कला, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2017, 8वां संस्करण, पृष्ठ सं. 154*
6. *कक्कड़, कृष्ण नारायण, समकालीन कला संदर्भ तथा स्थिति, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1980, पृष्ठ सं. 16*
7. *मागो, प्राणनाथ, भारत की समकालीन कला एक परिप्रेक्ष्य, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, नई दिल्ली, 2006, पृष्ठ सं. 180*
8. *प्रताप, रीता, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिशिल्प का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 17 वां संस्करण, 2014, पृष्ठ सं.350*
9. *जोशी, ज्योतिष, समकालीन कला, अंक 38-39, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, 2009,पृष्ठ सं. 23*
10. *भारद्वाज, विनोद, वृहद आधुनिक कला कोश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2009, पृष्ठ सं.79*